National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 13-04-2025, Accepted: 14-05-2025, Published: 29-05-2025
Volume 10, Issue 2, 2025, Page No. 46-49

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ० रोहित कुमार त्रिवेदी
प्राचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, वीरायतन बी० एड० कॉलेज, बिहार, भारत

सारांश
यह शोध अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षण प्रणाली है, जो भिन्न क्षमताओं, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को समान अवसर प्रदान करने का लक्ष्य रखती है। यह अध्ययन शिक्षकों की मानसिकता, उनके दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षा को अपनाने में आने वाली चुनौतियों को समझने के लिए किया गया है।
शोध में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण को विभिन्न पहलुओं, जैसे कि उनकी जागरूकता, अनुभव, संसाधनों की उपलब्धता, प्रशासनिक सहयोग और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव के आधार पर विश्लेषण किया गया है। आंकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि अधिकांश शिक्षक समावेशी शिक्षा को एक सकारात्मक अवधारणा के रूप में स्वीकार करते हैं, लेकिन व्यवहारिक स्तर पर उन्हें इसे लागू करने में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें शिक्षण सामग्री की उपयुक्तता, कक्षा प्रबंधन, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति उपयुक्त शिक्षण पद्धति तथा प्रशासनिक और तकनीकी सहायता की सीमाएं शामिल हैं। शोध में यह भी देखा गया कि जिन शिक्षकों को समावेशी शिक्षा संबंधी प्रशिक्षण मिला है, वे इस अवधारणा को अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने में सक्षम होते हैं, जबकि बिना प्रशिक्षण के शिक्षकों को इसे लागू करने में कठिनाई होती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों की व्यक्तिगत मान्यताएँ, उनके अनुभव तथा विद्यालयों की नीतियाँ भी उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित करती हैं।
अंततः, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण, संसाधन और सहयोग की आवश्यकता है। प्रशासनिक स्तर पर नीतिगत सुधारों और समावेशी शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता से शिक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्ति को और अधिक सशक्त किया जा सकता है। इस शोध के निष्कर्ष न केवल शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, बल्कि विद्यालयों में समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए भी सहायक हो सकते हैं।

मूल शब्दः माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, समावेशी शिक्षा, अभिवृत्ति, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है और समावेशी शिक्षा वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभर रही है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को समान अवसर प्रदान करना और उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में समाहित करना है, ताकि वे भी समान रूप से शिक्षा ग्रहण कर सकें और समाज का सक्रिय अंग बन सकें।
विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका इस प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वे ही विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि उनके समग्र विकास में भी योगदान देते हैं। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक यदि समावेशी शिक्षा को सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाते हैं, तो यह विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल एवं सहायक वातावरण तैयार कर सकता है। शिक्षकों की अभिवृत्ति इस संदर्भ में निर्णायक कारक होती है, क्योंकि उनकी सोच, विश्वास और शिक्षण पद्धति का सीधा प्रभाव समावेशी शिक्षा की सफलता पर पड़ता है। यदि शिक्षक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, तो वे इन बच्चों की क्षमताओं को पहचानने और उनके विकास के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियाँ अपनाने में अधिक तत्पर होंगे।
इस शोध पत्र के माध्यम से माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण किया जाएगा। यह अध्ययन शिक्षकों की सोच, उनके समावेशी शिक्षा के प्रति झुकाव, इसे अपनाने में आने वाली चुनौतियों और इसे प्रभावी रूप से लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों को समझने पर केंद्रित होगा। इस शोध का उद्देश्य न केवल शिक्षकों की मानसिकता को समझना है, बल्कि उन कारकों की पहचान करना भी है जो उनकी सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं।
इस अध्ययन के निष्कर्षों से शैक्षिक नीति निर्माताओं, प्रशासकों और प्रशिक्षण संस्थानों को शिक्षकों के दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करने हेतु आवश्यक रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिलेगी। साथ ही, यह शोध शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के महत्व को समझाने और इसके सफल क्रियान्वयन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

आवश्यकता एवं महत्वः समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षण व्यवस्था है जिसमें सभी प्रकार के विद्यार्थियों, विशेष रूप से दिव्यांग, सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित तथा भिन्न–भिन्न क्षमताओं वाले बच्चों को शिक्षा का समान अवसर प्रदान किया जाता है। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि शिक्षक ही शिक्षा प्रणाली की रीढ़ होते हैं। यदि उनकी सोच और दृष्टिकोण समावेशी होंगे, तो वे कक्षा में विविध पृष्ठभूमि के छात्रों को उचित समर्थन और संसाधन उपलब्ध कराकर उनकी शिक्षा को प्रभावी बना सकते हैं। यह अध्ययन महत्वपूर्ण इसलिए भी है क्योंकि यह शिक्षकों की मानसिकता, उनके शिक्षण तरीकों तथा उनकी चुनौतियों को समझने में मदद करता है, जिससे नीति–निर्माताओं और प्रशासनिक तंत्र को आवश्यक सुधार लाने की दिशा में कार्य करने का मार्गदर्शन मिलता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शिक्षकों को प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता को उजागर करता है, जिससे वे समावेशी कक्षाओं को अधिक कुशलता से संचालित कर सकें। इस प्रकार, माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण शिक्षा प्रणाली

को अधिक समावेशी, प्रभावी और संवेदनशील बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकनः सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

सम्बंधित साहित्य

सापुला, लिंडा (2016) ने समावेशन कक्षा–कक्ष के प्रति माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, जिसके निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शिक्षकों की अभिवृत्ति में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएं पाई जाती हैं। समावेशन शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति दर्शाने वाले शिक्षक समावेशन कक्षा कक्ष के प्रति जागरूक होते हैं।

शर्मा, उर्मिला एवं विजय सागर (2018) ने बी० एड० प्रशिक्षणार्थियों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष में ज्ञात हुआ कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के बी० एड० प्रशिक्षणार्थियों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है, इसी प्रकार महिला तथा पुरुष के बी० एड० प्रशिक्षणार्थियों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शर्मा, दिलीप कुमार एवं कौशिक विभा (2020) ने समावेशी शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया, निष्कर्ष रूप में प्राप्त हुआ कि समावेशी शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्यः

इस शोध के उद्देश्य निम्नवत हैं–

1. माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएंः

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना अधोलिखित है –

1. माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधिः

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्याः प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

न्यादर्शः प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य विधि के अंतर्गत आने वाले सरल यादृच्छिक न्यादर्शन (Simple Randaom Sampling) विधि का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों अध्यापनरत 100 शिक्षक व शिक्षिकाओं तथा 100 ग्रामीण व 100 शहरी शिक्षकों का चयन किया गया है।

शोध उपकरणः प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति के विभिन्न आयामों को दृष्टिगत रखते हुए कुल 50 कथनों का समावेश किया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है:

परिकल्पना 1: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरणः

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	टिप्पणी	
					.05 स्तर	.01 स्तर
महिला	100	153.25	10.61	1.55	कोई सार्थक अंतर नहीं है।	कोई सार्थक अंतर नहीं है।
पुरुष	100	156.57	9.19			

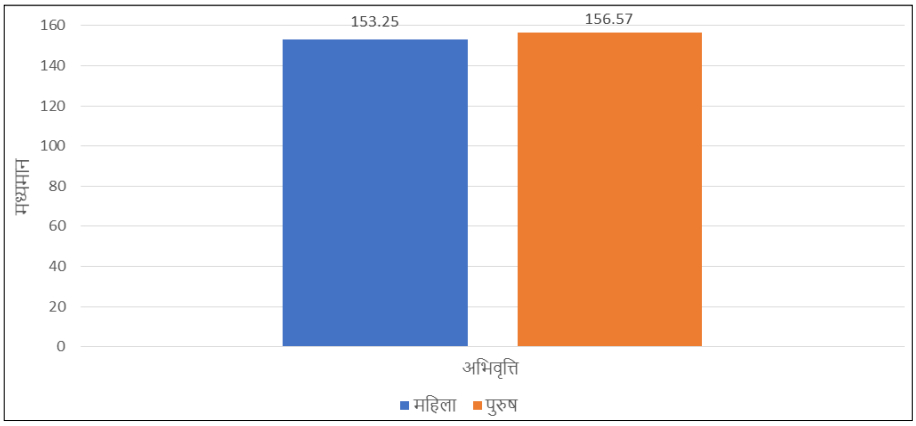

ग्राफ 1: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह महिला शिक्षकों का है जिसका मध्यमान 153.25 तथा मानक विचलन 10.61 है, जबकि दूसरा समूह पुरुष शिक्षकों का है जिसका मध्यमान 156. 57 तथा मानक विचलन 9.19 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी– परीक्षण (क्रांतिक अनुपात) का प्रयोग किया गया जिसका मान 1.55 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 58 से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना संख्या 1 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 2: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	C.R. मान	टिप्पणी	
					.01 स्तर	.05 स्तर
शहरी	100	150.62	10.67	1.87	सार्थक अंतर नहीं है।	सार्थक अंतर नहीं है।
ग्रामीण	100	152.18	10.30			

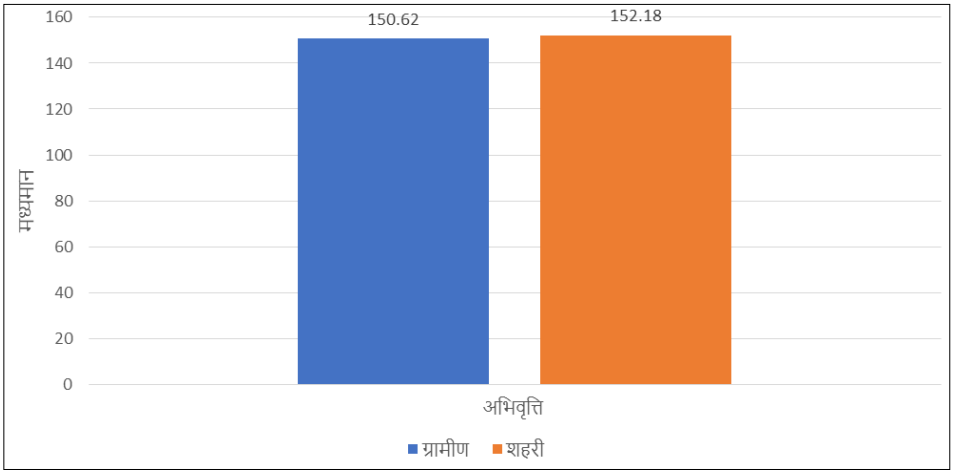

ग्राफ 2: माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तालिका के अनुसार प्रथम समूह ग्रामीण शिक्षकों का है जिसका मध्यमान 150.62 तथा मानक विचलन 10.67 है, जबकि दूसरा समूह शहरी शिक्षकों का है जिसका मध्यमान 152. 18 तथा मानक विचलन 10.30 है। इन समूहों के चरों के मध्यमानो की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके आधार पर क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 1.87 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है इस प्रकार शोधकर्ता की परिकल्पना संख्या 2 स्वीकार की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को भी स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के प्रति महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि दोनों ही लिंगों के शिक्षक समावेशी शिक्षा की आवश्यकता, महत्व और इसके प्रभाव को समान रूप से स्वीकारते हैं। उनके विचारों, दृष्टिकोण और व्यवहार में कोई ऐसा महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया जो यह दर्शाए कि लिंग के आधार पर उनकी अभिवृत्ति भिन्न है। यह निष्कर्ष शिक्षा प्रणाली में समावेशिता को बढ़ावा देने और शिक्षकों के समान दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने की दिशा में सहायक सिद्ध हो सकता है।

इस अध्ययन के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण और शहरी शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। प्राप्त आँकड़ों और विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि दोनों क्षेत्रों के शिक्षक समावेशी शिक्षा की अवधारणा को समान रूप से स्वीकार करते हैं और इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। चाहे संसाधनों की उपलब्धता और शैक्षिक परिवेश में कुछ अंतर हो, फिर भी शिक्षकों की मानसिकता और समावेशी शिक्षा को लागू करने की तत्परता में कोई उल्लेखनीय भिन्नता नहीं पाई गई। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध की उपयोगिता

समावेशी शिक्षा के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन एक अत्यंत महत्वपूर्ण शोध विषय है, जिसका शैक्षिक उपयोगिता के दृष्टिकोण से गहरा प्रभाव है। यह अध्ययन शिक्षकों की मानसिकता, शिक्षण–पद्धति, तथा उनके दृ ष्टिकोण को समझने में सहायक होता है, जिससे यह पता चलता है कि वे विविध पृष्ठभूमि और विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को समान अवसर देने के लिए कितने तैयार हैं। इस शोध के माध्यम से नीति–निर्माताओं, शैक्षिक संस्थानों और प्रशिक्षकों को यह जानने का अवसर मिलता है कि समावेशी शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और उन्हें दूर करने के लिए कौन–से

सुधार आवश्यक हैं। यह अध्ययन शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक हो सकता है, जिससे वे विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को मुख्यधारा की शिक्षा में सम्मिलित करने हेतु अधिक सक्षम बन सकें। इसके अलावा, यह शोध सरकार और शिक्षा विभाग को समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीतियों के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करता है, जिससे प्रत्येक छात्र को समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। संक्षेप में, यह अध्ययन न केवल शिक्षकों के दृष्टिकोण और उनकी तैयारियों का आकलन करता है, बल्कि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने और अधिक समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने में भी सहायक सिद्ध होता है।

सन्दर्भ सूची

1. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
2. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना।
3. अग्रवाल, एम. (2019): समावेशी शिक्षा और शिक्षकों की भूमिका, शिक्षा प्रकाशन,आगरा।
4. गुप्ता, आर. (2020): समावेशी शिक्षाः सिद्धांत और व्यवहार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
5. शर्मा, पी. (2018): माध्यमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा का प्रभाव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली।
6. कुमार, एस. (2021): समावेशी कक्षा में शिक्षण विधियाँ और चुनौतियाँ, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
7. मिश्रा, डी. (2017): शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्तिः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, ज्ञानदीप पब्लिकेशन, वाराणसी।
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (छब्म्त्ज्) (2020): समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक मार्गदर्शिका. छब्म्त्ज् प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. सिंह, आर. (2016): शिक्षा में समावेशनः शिक्षकों की समझ और व्यवहार, विश्वविद्यालय प्रेस, पाटलिपुत्र।
10. विश्वनाथ, के. (2019): माध्यमिक स्तर पर समावेशी शिक्षा की स्थिति और शिक्षकों की मानसिकता. भारतीय शिक्षण शोध जर्नल, 25(3), 45–60।